प्रश्न निजीकरण क्या है।
उत्तर निजीकरण का आशय सार्वजनिक क्षेत्र को संचालित एवं नियन्त्रित करने के लिए निजी क्षेत्र को आमन्त्रित करना है, राज्य के प्रबन्ध, नियमन एवं नियन्त्रण के अन्तर्गत आने वाले उपक्रमो पर से शासकीय नियन्त्रण को समाप्त कर उनको निजी क्षेत्र के प्रबन्ध एवं नियन्त्रण मे सौंप देना है।
निजीकरण द्वारा निजी क्षेत्र के कार्य क्षेत्र और दायित्व मे वृद्धि हो जाती है तथा राष्ट्र के प्रति भूमिका बढ़ती है।
यह आंशिक अथवा पूर्ण निजीकरण के रूप मे हो सकता है। आंशिक निजीकरण मे सार्वजनिक उपक्रम पर राज्य का नियन्त्रण एवं स्वामित्व विद्यमान रहता है तथा निजी क्षेत्र को उपक्रम की पूंजी, संचालन एवं लाभभागिता मे एक सीमा तक प्रवेश दे दिया जाता है। पूर्ण निजीकरण मे उपक्रम का प्रबन्ध एवं संचालन पूर्ण रूप से निजी क्षेत्र के हाथों मे चला जाता है। निजी क्षेत्र उपक्रम से सम्बन्धित योजनाओं पर स्वतन्त्र होकर निर्णय लेता है।
कुछ लोग निजीकरण को राष्ट्रीयकरण के विपरीत विचारधारा मानते है, परन्तु ऐसा नही है। राष्ट्रीयकरण मे सरकार कुछ हर्जाने का भुगतान कर उपक्रम को पूर्ण रूप से अपने स्वामित्व एवं नियन्त्रण मे ले लेती है, निजीकरण मे निजी क्षेत्र द्वारा सार्वजनिक उपक्रम की अंश पूंजी मे निवेश किया जाता है और प्रबन्ध

मे सहभागिता अथवा पूर्ण स्वामित्व प्राप्त किया जाता है।

निजीकरण के उद्देश्य :→

निजीकरण की अवधारणा का प्रादुर्भाव सार्वजनिक क्षेत्रों की असफलता के कारण हुआ।

निजीकरण मे ऐसे उद्देश्यो को प्राप्त करने का लक्ष्य भी निहित है जिनको प्राप्त करना वर्तमान औद्योगिक युग मे प्रत्येक विकासशील राष्ट्र के लिए अनिवार्य हो गया है।

निजीकरण के मुख्य उद्देश्य निम्न है:—

1. राष्ट्र का तीव्र गति से आर्थिक विकास करना।
2. राजकोषीय घाटे को कम करना।
3. उपक्रमो की कार्यक्षमता मे वृद्धि करना।
4. विनियोग पर पर्याप्त प्रतिदान प्राप्त करना।
5. लोक उपक्रमो की प्रतियोगितात्मक शक्ति मे वृद्धि करना
6. औद्योगिक प्रबन्ध को शक्तिशाली बनाना।
7. उपक्रमो की उत्पादकता मे वृद्धि करना।
8. राष्ट्रीय संसाधनों का अधिकाधिक विदोहन करना।
9. विस्तृत स्वामित्व एवं उत्तरदायित्व निश्चित करना।
10. विदेशी पूंजी का अधिकाधिक कुशल प्रयोग करना।
11. कार्य की दशाओं मे सुधार करना।
12. उच्च तकनीक का प्रयोग सम्भव बनाकर गुणवत्ता मे सुधार करना।
13. रोजगार सुविधाओं मे वृद्धि करना।
14. लोकक्षेत्र मे सरकारी स्वामित्व को सीमित कर जनता की सहभागिता बढाना।

निजीकरण एवं उदारीकरण की नीति के कारण

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की ~~अर्थव्यवस्था~~ अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ती जा रही है जो कि भारत को विश्व के आर्थिक पटल पर एक सशक्त स्थान दिलाने मे सहायक है।

निगमीकरण द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र मे स्वदेशी उद्यमियों एवं विदेशी उद्योगपतियों की भागीदारी से औद्योगिक विकास मे गतिशीलता आई है तथा औद्योगिक विकास की दर 5 गुना बढ़कर 8.5% हो गई है।

निगमीकरण एवं उदार आर्थिक नीति के फलस्वरूप मुद्रास्फीति की दर नियन्त्रित करने मे मदद मिली है।

यह 1991 मे 17% थी जो 2013-14 के अन्त मे घटकर 6.7% रह गई है। बाद के वर्षों मे मुद्रास्फीति की दर मे वृद्धि होती रही कच्चे तेल की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतो मे आसमान्य वृद्धि होने के कारण नवम्बर 2010 मे थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति 8.1 प्रतिशत से बढ़कर 8.9 प्रतिशत हो गई।

फरवरी 2015 मे पुनः घटकर 5.03 प्रतिशत हो गई।

Scanned with CamScanner